Seventh Nadi Utsav seminar concept note

The Eternal Yamuna: Chronicles of Conflict, Biotic Healing, and the Socio-Cultural Hearth

When the waters of the Yamuna rose in 2023 and reached the Red Fort, some said she had reclaimed an older path. The Yamuna, it is believed, was eager to touch baby Krishna's feet even as Vasudev struggled to cross her surging vastness. The Yamuna, it is also said, was dragged over the landscape by a stubborn Balarama. Rivers are now defined by this contradiction - they shape civilisations, they are duly worshipped: but they are also harnessed and polluted. As we celebrate the abundance that rivers enable, we must take cognisance of the brutality in our relationship to rivers. The Yamuna is the site for Krishna Leela in Jayadeva's *Gita Govinda*. The same river has witnessed the battles of Kurukshetra and Panipat. And the Yamuna has also borne the concrete weight of the transformation of the capital city region over decades. Now that the flooding of the river has become an annual feature, we must pause and ask - how can we as scholars, students, custodians, environmentalists, and beneficiaries of the Yamuna ensure that the river thrives in environmental and cultural terms?

At the seventh Nadi Utsav, the Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), an autonomous trust under the Ministry of Culture, Government of India, in collaboration with the Department of English, University of Delhi, is organising a seminar dedicated to articulating the significance of the Yamuna across academic disciplines. The national seminar, titled 'The Eternal Yamuna: Chronicles of Conflict, Biotic Healing, and the Socio-Cultural Hearth' aims to revisit and expand the existing perceptions of the river. The seminar intends to understand the Yamuna through an interdisciplinary perspective - as river, as metaphor, as deity, as an entity with whims and needs, as a pivot of culture and memory, and as a water body in urgent need of restoration and preservation.

We invite abstracts (250 words) that address any of the following sub themes pertaining to the Yamuna. The last date for abstract submission is 30th June 2026.

1. The River of Chronicles: Civilisational Memory and the Domestic Sphere
2. A Living Link: Oral Traditions, Artisanal Legacies, and Livelihoods
3. The Sacred Stream: Rites of Passage, Ritual Arts, and Cultural Identity
4. Contested Flows: Strategic Conflict, Urbanisation and its Pressures, and the Battles for Space
5. Ethics, Biotics, and the Environment in the Assessment and Conservation of the Yamuna

सातवाँ नदी उत्सव संगोष्ठी अवधारणा

शाश्वत यमुना: संघर्ष के आख्यान, जैविक उपचार और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन-अंगीठी

जब 2023 में यमुना का जलस्तर बढ़ा और वह लाल क़िले को छूने लगी, तो कुछ लोगों ने कहा कि नदी ने पुराना रास्ता वापस ले लिया है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब वसुदेव नवजात कृष्ण को सर पे लिये यमुना की उफनती विशालता को पार करने का संघर्ष कर रहे थे, तब दरअसल यमुना कृष्ण के चरणों को स्पर्श करने के लिये व्याकुल थी। यह मान्यता भी है कि एकदा हठ पर अड़े बलराम ने यमुना को जबरन खींचकर उसका मार्ग बदल दिया था। आज के दौर में नदियाँ इसी विरोधाभास से परिभाषित हैं—वे सभ्यताओं को आकार देती हैं, वे विधिवत पूजित हैं; लेकिन साथ ही उन्हें बांधा भी जाता है, प्रदूषित भी किया जाता है। जब हम उस विपुलता का उत्सव मनाते हैं जो नदियाँ हमें देती हैं, तो हमें नदियों के साथ अपने क्रूर होते व्यवहार को भी संज्ञान में लेना होगा।

यमुना जयदेव के 'गीत गोविन्द' में कृष्ण लीला की स्थली है। यही नदी कुरुक्षेत्र और पानीपत के युद्धों की साक्षी है, और इसी यमुना ने दशकों से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के कंक्रीट में बदलते रूप के भार को भी सहा है। वर्तमान समय में जब नदी में बाढ़ आना एक वार्षिक घटना बन गयी है, तो हमें सोचना होगा कि हम—अध्येता, छात्र, संरक्षक, पर्यावरणविद् और यमुना के हितभागी के रूप में यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह नदी पर्यावरणीय और सांस्कृतिक, दोनों रूपों में समृद्ध हो?

सातवें नदी उत्सव के अवसर पर, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए)—जो भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त न्यास है, दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के सहयोग से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है, जो विभिन्न शैक्षणिक विषयों के माध्यम से यमुना के महत्त्व को रेखांकित करने पर केन्द्रित है। 'शाश्वत यमुना: संघर्ष के आख्यान, जैविक उपचार और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन-अंगीठी'— इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्देश्य यमुना नदी के प्रति मौजूदा दृष्टिकोण की समीक्षा करना और उसका विस्तार करना है। संगोष्ठी का उद्देश्य यमुना को एक अन्तर्विषयक परिप्रेक्ष्य से समझना है—एक नदी, एक रूपक, एक देवी, एक ऐसी इकाई के रूप में जिसकी अपनी इच्छायें और ज़रूरतें हैं, संस्कृति और स्मृति के एक केन्द्र के रूप में, और एक ऐसे जलस्रोत के रूप में जिसे अविलम्ब जीर्णोद्धार और संरक्षण की आवश्यकता है।

हम यमुना से सम्बन्धित निम्नलिखित उप-विषयों पर शोध-सार (Abstracts - 250 शब्द) आमंत्रित करते हैं।

शोध-सार भेजने की अन्तिम तिथि 30 जून 2026 है।

1. गाथाओं की नदी: सभ्यता की स्मृति और घरेलू क्षेत्र
2. एक जीवन्त कड़ी: मौखिक परंपराएँ, शिल्प विरासत और आजीविका
3. पवित्र धारा: जीवन के संस्कार, अनुष्ठान कलाएँ और सांस्कृतिक पहचान
4. अशान्त प्रवाह: सामरिक द्वंद्व, बढ़ता शहरीकरण और ज़मीन के लिये संघर्ष
5. यमुना का पारिस्थितिकी आकलन और संरक्षण: नैतिकता, जैव-घटक और पर्यावरण

Abstract submission link/ शोध-सार भेजने की लिंक
https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSfA8DK2FR_hCEVU77flmmzsKUrGnxg1-_liD1WvcDG1H_gK3A/viewform